राजस्थान एवं पंजाब के सहषिक्षा व महिला षिक्षा संस्थानों की महिला सषक्तिकरण में भूमिका के प्रति छात्राओं की अभिवृति एवं सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

[1]मनीषा शर्मा एवं [2]डॉ. सरोज वर्मा

[1]रिसर्च फैलो, पीएच.डी. (शिक्षा), टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राजस्थान)
[2]असिसटेंट प्रोफेसर, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राजस्थान) 335002

प्रस्तावना–

दुनिया के निर्माण के पश्चात ईश्वर ने विचार किया होगा कि इस दुनिया को और अधिक सुन्दर बनाना होगा और उन्होंने मानव की रचना की। मानव को दो रूप दिये एक पुरुष का व दूसरा महिला का। ये दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं परन्तु महिला के बिना दुनिया का कोई अस्तित्व ही नहीं है। ईश्वर ने महिला की शारीरिक रचना ही इस प्रकार की है कि वह स्वयं निर्मात्री हो गयी। कई युग पुरुष हुए हैं जो महिला से किसी न किसी रूप में चाहे वह मां, बहन, पत्नी, भाभी रही हो, प्रभावित होकर महान बने। युग चाहे जो भी रहा हो संसार की तरक्की महिला के विकास पर ही आधारित रही है।

निश्चित ही प्राचीन काल में महिलाओं का व्यक्तित्व सुरक्षित था। सभ्यता के प्रारम्भ में परिवार के केन्द्र में महिला थी। परिवार मातृसत्तात्मक था किन्तु कालान्तर में धीरे–धीरे सभी समाजों में सामाजिक व्यवस्था मातृसत्तात्मक से पितृसत्तात्मक हो गयी और महिला समाज के हाशिए में चली गयी।

आर्यों की सभ्यता और संस्कृति के प्रारम्भिक काल में महिलाओं की स्थिति बहुत सुदृढ़ रही है। वैदिक काल में परिवार के सभी कार्यों और भूमिकाओं में पत्नी को पति के समान अधिकार प्राप्त थे। रामायण महाभारत के समय महिलाओं के अधिकार पहले जैसे नहीं रहे। वर्ण–व्यवस्था में भी कठोरता आई तथा नारी घर–गृहस्थी तक सीमित रहने लगी। मुगलकाल में महिला के सम्मान को विशेष धक्का लगा तथा वह पर्दे में रखी जाने लगी। उससे शिक्षा में समानता के अधिकार छीन लिये गये। इस युग में महिलाएं मूक प्राणी बन कर रह गयी थी।

महिला सशक्तिकरण का एक अवधारणा तथा सामाजिक नीति के दार्शनिक आधार के रूप में उद्‌भव नवीन है परन्तु इसका अर्थ केन्द्रीय भाव तथा संघर्ष देश में समाहित है – यह प्राचीन उद्‌भव है। महिला सशक्तिकरण का विचार वर्तमान संदर्भ में तीसरी दुनिया के महिलावादी संगठन द्वारा बहुत अधिक विचारमंथन के बाद दिया गया। महिला सशक्तिकरण उस सैद्धान्तिक संरचना का निर्माण करता है जो महिलाओं की निराश्रितता पर जोर देता है। सामाजिक संदर्भ में महिलाओं के शक्तिहीनता व आश्रितता के कारण यह वर्तमान में प्रासंगिक मुद्‌दा है। बहुत अधिक प्रयोग व स्पष्टता के अभाव के कारण महिला सशक्तिकरण के प्रत्यय को एक नारे के रूप परिवर्तित कर दिया गया है।

निश्चित रूप से सशक्तिकरण शक्तिहीनता से शक्तिशाली होने का संक्रमण है। यह महिलाओं की जन्मजात शक्तियों व अपनी आत्म प्रतिष्ठा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है। इसका अर्थ यह नहीं कि महिलाओं को अधिकार देकर हम उन्हें दूसरों पर शासन करने का, दूसरों की बुराइयां करने का, पुरुषों का शोषण करने का तथा पुरुष पर अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने का अधिकार दे रहे हैं। इसका अर्थ है महिलाओं को समाज में उनके सहयोग के मूल्य को खुद समझना व समाज द्वारा पहचान दिलवाना है। वास्तविक अर्थों में महिला सशक्तिकरण का अर्थ स्वयं की पहचान, अपनी क्षमताओं, योग्यताओं को बढ़ाना व समाज में भागीदारी कायम करना है।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ –

महिला सशक्तिकरण को विभिन्न विद्वानों द्वारा भिन्न भिन्न रूप में परिभाषित किया गया है – डेवर की एक सम्यक परिभाषा के अनुसार महिला सशक्तिकरण का अर्थ नियन्त्रण की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध करवाना, निर्णय करने की शक्ति देना तथा अपने वर्ग के प्रति चेतना के स्तर को बढ़ाना और उन्हें उनका सही स्थान दिलवाना।

सासे के अनुसार – महिला सशक्तिकरण एक प्रक्रिया है जो कि एक शक्तिहीन महिला को इस योग्य बनाती है कि वह अपना एकाधिकार, आत्मनियन्त्रण व आत्मविश्वास विकसित कर सके।
रॉय के अनुसार – महिला सशक्तिकरण शक्तियों के पुनर्विभाजन से संबंधित है।

वर्तमान समय में महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण –

हाल ही के वर्षों में जारी प्रतिवेदनों के विश्लेषणों से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लैंगिक विकास व सशक्तिकरण की स्थिति सामने आई है। बहुत से देश अभी भी इस बात में विश्वास करते हैं कि महिलाओं का स्थान घर की चार दिवारी के अन्दर ही है। इस कारण संसार के लगभग सौ करोड़ निरक्षर वयस्कों में से दो तिहाई महिलाएं हैं तथा पूरे संसार की 130 अरब निरक्षर बच्चों में से दो तिहाई लड़कियां हैं।

आर्थिक क्षेत्र में भी प्रत्येक देश में चाहे वह विकसित हो या विकासशील महिलाओं का शोषण विद्यमान है। उन्हें कृषि क्षेत्र के अतिरिक्त अन्य स्थानों पुरुषों के समान ही कार्य करने के बावजूद पुरुषों की तुलना में तीन चौथाई वेतन ही दिया जाता है। ग्रामीण महिलाएं विकासशील देशों में 55 प्रतिशत से अधिक अन्न का उत्पादन करने में अपना योगदान देती हैं। लेकिन उन्हें इसका कोई श्रेय नहीं है।

भारतीय परिदृश्य में महिलाओं की स्थिति –

चीन के बाद भारत ऐसा दूसरा देश है जिसने कि 100 करोड़ की जनसंख्या को पार कर लिया है। भारत की 2001 की जनगणना के अनुसार इसकी जनसंख्या एक मार्च 2001 तक 1,027,015,247 थी। लेकिन भारत का लिंग अनुपात संतुलन सही नहीं है। देश के सबसे अधिक जनसंख्या वाले 6 देशों में शामिल भारत में लिंग अनुपात 933 है जो कि बहुत ही निम्न है।

भारत में साक्षरों की 566,714,995 है यह कुल जनसंख्या का 65.38 प्रतिशत है। जिसमें से 339,969,048 पुरुष (75.85 प्रतिशत) हैं तथा 226,475,947 महिलाएं (54.15 प्रतिशत) हैं। इस प्रकार पुरुष तथा महिलाओं की साक्षरता में 21.70 प्रतिशत का अन्तर है।

प्रत्येक आयु स्तर पर साक्षरता दर पुरुषों की तुलना में महिलाओं में कम है। विद्यालयों में लड़कियों का नामांकन प्रत्येक स्तर पर लड़कों की तुलना में कम है। विद्यालय छोड़ने वाले बच्चों में भी प्राथमिक तथा उच्च स्तर पर लड़कियों की संख्या अधिक है।

अध्ययन का महत्त्व–

आज आवश्यकता है तो केवल उस शिक्षा योजना की जो प्रत्येक गांव में पहुंचकर महिलाओं की उनकी स्थिति, अधिकार एवं कर्तव्यों का पूर्ण ज्ञान करा सके, समाज के उस उदार दृष्टिकोण की जिससे वह जीवन को सही रूप से चरितार्थ कर सकने में सक्षम हो सके, पुरूष हृदय में महिला के प्रति उसे आगे बढ़ाने में सहयोग देने की भावना भर सके।

इन स्थितियों से उत्पन्न कैच22 स्थिति का सामना कैसे किया जाए? यही इस अध्ययन की आवश्यकता बनी है। किस प्रकार के शिक्षण संस्थानों का चयन किया जाए जिससे महिलाओं में आत्मविश्वास की बढ़ोतरी हो साथ ही चयनित क्षेत्र के अधिकाधिक योग्यता प्राप्त कर सके जो समाज के काम आने में भी पूर्ण क्षमताओं के साथ उपयोग कर सके।

राजस्थान एवं पंजाब दोनों भारत गणराज्य के दो पड़ौसी प्रान्त हैं। दोनों के प्रति व्यक्ति आय, शिक्षा तथा राजस्व आदि क्षेत्रों में पंजाब को उन्नत पाया गया है। ऐसे में दोनों प्रान्तों की महिलाओं के सशक्तिकरण में शिक्षा संस्थानों की भूमिका की तुलना करना विभिन्न पहलुओं/तथ्यों को स्पष्ट करने में सहायक होगा। साथ ही इनके सामाजिक मूल्यों के संबंध में भी निर्णय लेना आवश्यक है, क्योंकि मूल्यविहीन समाज को उन्नत समाज की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। अतः यह भी देखना अतिआवश्यक प्रतीत होता है कि अर्थप्रधान युग में सशक्तिकरण के साथ–साथ मूल्यों से दूर तो नहीं होते जा रहे।

समस्या कथन–

'राजस्थान एवं पंजाब के सहशिक्षा व महिला शिक्षा संस्थानों की महिला सशक्तिकरण में भूमिका के प्रति छात्राओं की अभिवृति एवं सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन'

अध्ययन के उद्देष्य –

(1) राजस्थान की महिला शिक्षा संस्थानों की छात्राओं एवं पंजाब की महिला शिक्षा संस्थानों की छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति की तुलना करना।

(2) राजस्थान की सहशिक्षा संस्थानों की छात्राओं एवं पंजाब की सहशिक्षा संस्थानों की छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति की तुलना करना।

(3) राजस्थान की महिला शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् छात्राओं एवं पंजाब की महिला शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति की तुलना करना।

(4) राजस्थान की सहशिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् छात्राओं एवं पंजाब की सहशिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति की तुलना करना।

(5) राजस्थान की महिला शिक्षा संस्थानों की अध्ययन उपरांत छात्राओं एवं पंजाब की महिला शिक्षा संस्थानों की अध्ययन उपरांत छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति की तुलना करना।

(6) राजस्थान की सहशिक्षा संस्थानों की अध्ययन उपरांत छात्राओं एवं पंजाब की सहशिक्षा संस्थानों की अध्ययन उपरांत छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति की तुलना करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ–

(1) राजस्थान की महिला शिक्षा संस्थानों की छात्राओं एवं पंजाब की महिला शिक्षा संस्थानों की छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति में कोई तुलनात्मक अन्तर नहीं है।

(2) राजस्थान की सहशिक्षा संस्थानों की छात्राओं एवं पंजाब की सहशिक्षा संस्थानों की छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति में कोई तुलनात्मक अन्तर नहीं है।

(3) राजस्थान की महिला शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् छात्राओं एवं पंजाब की महिला शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति में कोई तुलनात्मक अन्तर नहीं है।

(4) राजस्थान की सहशिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् छात्राओं एवं पंजाब की सहशिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति में कोई तुलनात्मक अन्तर नहीं है।

(5) राजस्थान की महिला शिक्षा संस्थानों की अध्ययन उपरांत छात्राओं एवं पंजाब की महिला शिक्षा संस्थानों की अध्ययन उपरांत छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति में कोई तुलनात्मक अन्तर नहीं है।

(6) राजस्थान की सहशिक्षा संस्थानों की अध्ययन उपरांत छात्राओं एवं पंजाब की सहशिक्षा संस्थानों की अध्ययन उपरांत छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति में कोई तुलनात्मक अन्तर नहीं है।

न्यादर्ष–

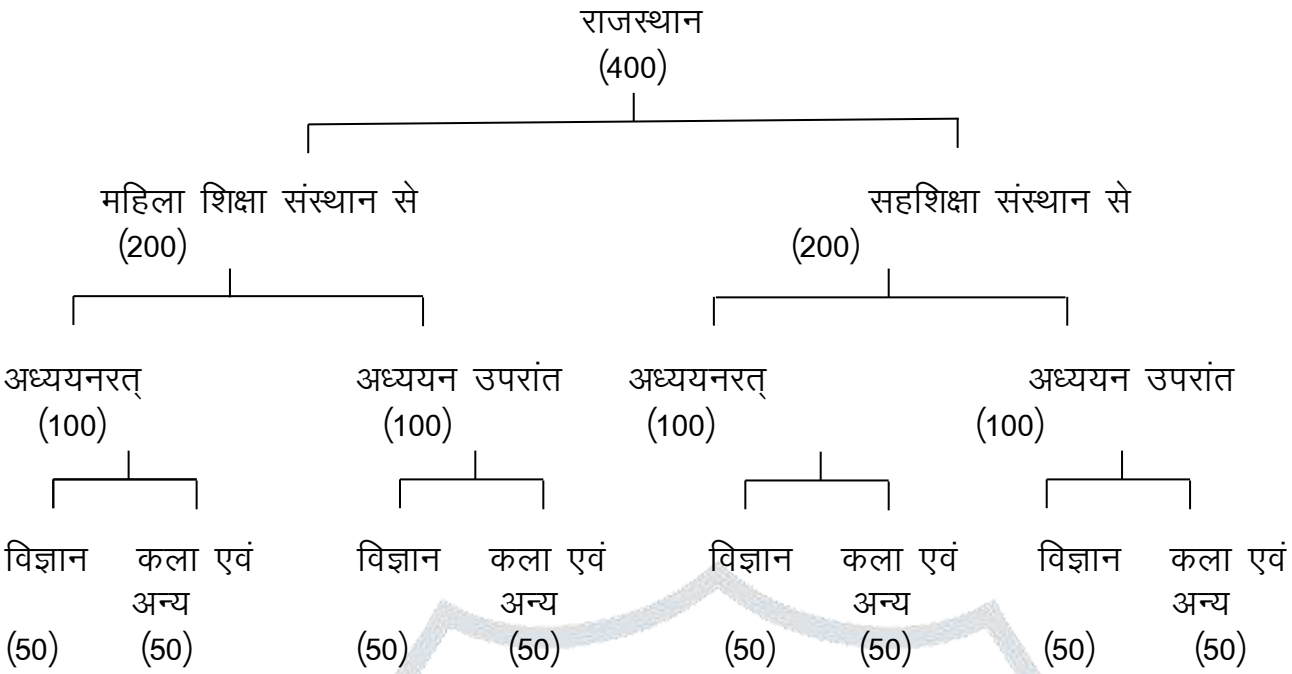

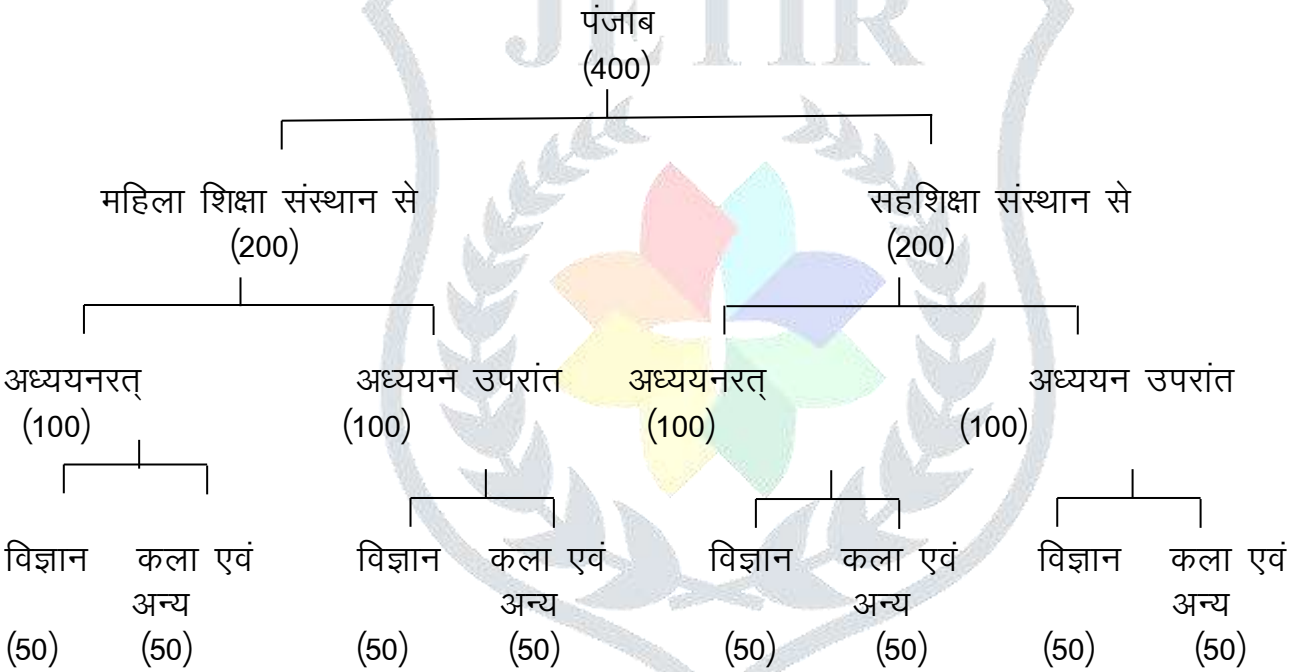

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण–

शोधकार्य की महत्ता उपकरण पर निर्भर करती है, क्योंकि उनकी उपयुक्तता, वैधता व विश्वसनीयता पर ही प्रदत्तों की विश्वसनीयता व वैधता निर्भर करती है। अतः इस शोधकार्य में शोधकर्त्री द्वारा अभिवृति मापने हेतु स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया। ये उपकरण प्रश्नावली के रूप में है।

अध्ययन का परिसीमन–

(1) अध्ययन का क्षेत्र राजस्थान के हनुमानगढ़ व श्रीगंगानगर एवं राजधानी जयपुर तथा पंजाब के फिरोजपुर व मुक्तसर जिले एवं राजधानी चंडीगढ़ को चुना गया।

(2) न्यादर्श महिला शिक्षा संस्थानों एवं सहशिक्षा संस्थानों में स्तरीकरण करके यादृच्छ ;ंदकवउद्ध रूप से चुना गया।

(3) न्यादर्श में लिंग भेद का वैभिन्य नहीं रखा गया। न्यादर्श केवल छात्राओं का लिया गया है।

(4) न्यादर्श में मान्यता प्राप्त महाविद्यालों एवं विश्वविद्यालयों में नियमित अध्ययनरत् तथा नियमित अध्ययन उपरांत छात्राओं को चुना गया है।

दत्तों का संकलन–

शोध कार्य हेतु आंकडें एकत्र करने के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया। इसमें लिखित प्रश्नावली को अपनाया गया।

विश्लेषण –शोध में प्रयुक्त चरों के आधार पर सारिणी, लेखाचित्र व व्याख्या के आधार पर विष्लेषण अग्रान्कित है –

परिकल्पना (1)राजस्थान की महिला शिक्षा संस्थानों की छात्राओं एवं पंजाब की महिला शिक्षा संस्थानों की छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति में कोई तुलनात्मक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष :

घटक	मध्यमान	संख्या	मानक विचलन	स्वातन्त्र संख्या	टी मान	सार्थकता का स्तर
राजस्थान (महिला षिक्षण संस्थानों की छात्राएं)	197	200	13.39	398	1.53	छै
पंजाब (महिला षिक्षण संस्थानों की छात्राएं)	195	200	12.76			

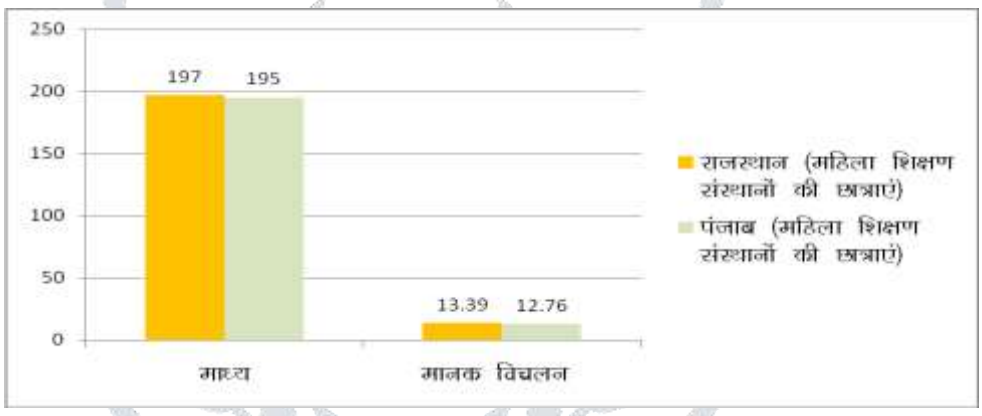

परिकल्पना स्वीकार की जाती है क्यों कि अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार टी मान 1.53 प्राप्त हुआ। स्वातन्त्रय संख्या 398 पर सारणी मान यह स्पष्ट करता है कि राजस्थान की महिला शिक्षा संस्थानों की छात्राओं एवं पंजाब की महिला शिक्षा संस्थानों की छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

परिकल्पना (2)

राजस्थान की सहशिक्षा संस्थानों की छात्राओं एवं पंजाब की सहशिक्षा संस्थानों की छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति में कोई तुलनात्मक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष :

परिकल्पना पूर्ण विश्वास से अस्वीकार की जाती है क्यों कि अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार टी मान 4.05 प्राप्त हुआ। स्वातन्त्रय संख्या 398 पर सारणी मान यह स्पष्ट करता है कि राजस्थान की महिला शिक्षा संस्थानों की छात्राओं एवं पंजाब की सहशिक्षा संस्थानों की छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति में .01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया है।

परिकल्पना (3)

राजस्थान की महिला शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् छात्राओं एवं पंजाब की महिला शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति में कोई तुलनात्मक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष :

परिकल्पना स्वीकार की जाती है क्यों कि अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार टी मान 0.55 प्राप्त हुआ। स्वातन्त्रय संख्या 198 पर सारणी मान यह स्पष्ट करता है कि राजस्थान की महिला शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् छात्राओं एवं पंजाब की महिला शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

परिकल्पना (4)

राजस्थान की सहशिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् छात्राओं एवं पंजाब की सहशिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति में कोई तुलनात्मक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष :

परिकल्पना अस्वीकार की जाती है क्यों कि अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार टी मान 2.56 प्राप्त हुआ। स्वातन्त्रय संख्या 198 पर सारणी मान यह स्पष्ट करता है कि राजस्थान की सहशिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् छात्राओं एवं पंजाब की सहशिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति में .05 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

परिकल्पना (5)

राजस्थान की महिला शिक्षा संस्थानों की अध्ययन उपरांत छात्राओं एवं पंजाब की महिला शिक्षा संस्थानों की अध्ययन उपरांत छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति में कोई तुलनात्मक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष :

परिकल्पना स्वीकार की जाती है क्यों कि अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार टी मान 1.69 प्राप्त हुआ। स्वातन्त्रय संख्या 198 पर सारणी मान यह स्पष्ट करता हैकि राजस्थान की महिला शिक्षा संस्थानों की अध्ययन उपरांत छात्राओं एवं पंजाब की महिला शिक्षा संस्थानों की अध्ययन उपरांत छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

परिकल्पना (6)

राजस्थान की सहशिक्षा संस्थानों की अध्ययन उपरांत छात्राओं एवं पंजाब की सहशिक्षा संस्थानों की अध्ययन उपरांत छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति में कोई तुलनात्मक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष :

परिकल्पना अस्वीकार की जाती है क्यों कि अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार टी मान 2.33 प्राप्त हुआ। स्वातन्त्रय संख्या 198 पर सारणी मान यह स्पष्ट करता है कि राजस्थान की सहशिक्षा संस्थानों की अध्ययन उपरांत छात्राओं एवं पंजाब की सहशिक्षा संस्थानों की अध्ययन उपरांत छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के संबंध में संस्थान की भूमिका के प्रति अभिवृति में .05 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

शोधकर्ता की टिप्पणी –

प्राप्त आंकडों के विश्लेषण उपरांत शोधकर्त्री के द्वारा जहां एक तरफ यह पाया गया कि राजस्थान एवं पंजाब के महिला शिक्षण संस्थानों की महिला सशक्तिकरण में भूमिका के प्रति छात्राओं की अभिवृति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है वहीं दोनों राज्यों की सहशिक्षा संस्थानों की महिला सशक्तिकरण में भूमिका के प्रति छात्राओं की अभिवृति में सार्थक अन्तर स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है।

शोधकर्त्री को शाोध कार्य से यह विदित हुआ कि राजस्थान में महिला सशक्तिकरण में महिला शिक्षा संस्थानों की भूमिका सहशिक्षा संस्थानों की अपेक्षा अधिक प्रभावपूर्ण है। यदि राजस्थान एवं पंजाब की महिला शिक्षा संस्थानों की महिला सशक्तिकरण के प्रति प्राप्त आंकडों की तुलना की जाए तो ज्ञात होता

है कि पंजाब की अपेक्षा राजस्थान के महिला शिक्षा संस्थान इस दिशा में अधिक अग्रणी है जब कि सह शिक्षा संस्थानों के आंकडें इसके विपरीत हैं। शोधकर्त्री ने पाया कि पंजाब के सहशिक्षा संस्थान वहां के महिला शिक्षा संस्थानों की भांति ही महिला सशक्तिकरण को बढावा दे रहे हैं। परन्तु राजस्थान के सहशिक्षा संस्थान इस दिशा में अभी पूरी तरह सफल नहीं हुए है बल्कि प्रयासरत हैं।